# भा. कृ. अनु. प.- केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान,
# क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, भरूच

## अनुसूचित जनजाति के किसानों के लिए आयोजित एक दिवसीय प्रशिक्षण
## "लवणीय भूमि में टिकाऊ खेती के लिए मृदा सुधार तथा प्रबंधन तकनीकें"
## तथा कृषि सामग्री वितरण

भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् के केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, भरूच द्वारा भारत सरकार की जनजातीय उप-योजना के अंतर्गत अनुसूचित जनजाति के किसानों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया| इस योजना का मुख्य उद्देश्य अनुसूचित जनजाति के किसानों का सामाजिक तथा आर्थिक विकास करना है, जिसके तहत संस्थान के द्वारा समय-समय पर अनेक प्रकार के प्रयास किये जाते है| इसी क्रम में यह प्रशिक्षण कार्यक्रम आमोद तालुका के ग्राम-समनी में दिनांक 30 मार्च, 2026 को आयोजित किया गया| इस कार्यक्रम में पांच तालुका (जम्बूसर, आमोद, वाघरा, पालेज तथा भरूच) के 15 गाँव के 60 से भी अधिक अनुसूचित जनजाति के किसानों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया| संस्थान के, तकनीकी अधिकारी श्री चंपक तावियाड तथा बलवंत डामोर तथा आकांक्षा विश्वकर्मा द्वारा किसानों का प्रशिक्षण के लिए पंजीकरण किया गया|

कार्यक्रम की शुरुआत अध्यक्ष महोदय तथा सभी अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन तथा ICAR गीत के साथ हुई | इसके पश्चात डा. मोनिका शुक्ला द्वारा स्वागत भाषण तथा कार्यक्रम की रूपरेखा का विवरण दिया गया| इसके पश्चात् केंद्र के अध्यक्ष डा. अनिल चिन्च्मालात्पुरे द्वारा विभिन्न संस्थाओं से आमंत्रित किये गए सभी अतिथि वक्ताओं; डॉ. डी. एस. शिनकर, (विषय विशेषज्ञ पशुपालन), कृषि विज्ञान केन्द्र, चासवड, भरूच; डा. जैमिन पंड्या, (एसोसिएट प्रोफेसर, पौध रोग विज्ञान) तथा डॉ. डी.वी. मुछड़िया, (एसोसिएट प्रोफेसर, कृषि कीटविज्ञान) कृषि कॉलेज, भरूच; डॉ. अंकित गडीया, (सहायक अनुसंधान वैज्ञानिक, बागवानी) नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, अनुसंधान केंद्र, तंछा; श्री धवल सिंह राज, कृषि अधिकारी, आमोद का पुष्पगुच्छ द्वारा स्वागत किया गया| इसके पश्चात अध्यक्ष महोदय द्वारा संस्थान के बारे में, जनजातीय उप-योजना के बारे में तथा लवणीय मृदाओं के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की गयी| इसके पश्चात अतिथि वक्ता डा. जैमिन पंड्या द्वारा "प्राकृतिक कृषि: टिकाऊ खेती की ओर एक सशक्त कदम" के बारे में प्रशिक्षण दिया गया| इसके पश्चात् केंद्र के मृदा वैज्ञानिक, डा. विश्वेश्वर गोरेन द्वारा "मृदा स्वास्थ्य: टिकाऊ खेती की नींव और इसे बनाए रखने के उपाय" विषय पर किसानों को जानकारी प्रदान की गयी| अतिथि वक्ता डॉ. डी. एस. शिनकर के द्वारा "पशुओं का प्रभावी पालन-पोषण, उनका स्वास्थ्य प्रबंधन और कृत्रिम गर्भाधान" विषय पर किसानों को जानकारी प्रदान की गयी| "बदलते कृषि परिवेश में फसलों में कीट की समस्या तथा प्रबंधन" की जानकारी अतिथि वक्ता डी. वी. मुछड़िया, द्वारा प्रदान की गयी| "बागवानी: टिकाऊ खेती, सतत आजीविका तथा आय के लिए एक बेहतर विकल्प" की जानकारी अतिथि वक्ता डॉ. अंकित गडीया, द्वारा प्रदान की गयी| इसके पश्चात श्री धवल सिंह राज द्वारा किसानों के लिए सरकारी योजनाओं की जानकारी तथा उनका लाभ उठाने की प्रक्रिया की जानकारी दी गयी| अंत में केंद्र की शस्य विज्ञान की वैज्ञानिक डा. मोनिका शुक्ला द्वारा "लवणीय मृदाओं से बेहतर उत्पादन के लिए प्रबंधन" विषय पर उद्बोधन दिया गया| तत्पश्चात किसानों के द्वारा खेती तथा मृदा से संबंधित समस्यायों के बारे में चर्चा की गयी तथा उनका समाधान करने के लिए सुझाव दिए गए| इसके पश्चात किसानों को प्रशिक्षण का प्रमाण पत्र वितरण किया गया| जनजातीय उप-योजना के अंतर्गत ही 50 अनुसूचित जनजाति के किसानों को फावड़ा तथा दरांती (एक नग) प्रदान किया गया| अंत में डा. विश्वेश्वर गोरेन द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव दिया गया| कार्यक्रम में संस्थान के अन्य कर्मचारी सुश्री प्रज्ञा के पारेख; श्री डी. के. मीना, श्री एम.के.पठान, श्री दिलीप वाघेला, श्रीमती मंजुलाबेन ने भी उपस्थित रहकर सहयोग प्रदान किया| मध्यान भोजन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ|

**Farmers Registration**

**Welcome of Experts**

**Distribution of Fawda & Daranti to ST Farmers**